हिंदी पत्रिका

त्रिकुटा

आत्मदीपः भव

IIM JAMMU
सा विद्या या विमुक्तये

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu

संपादकीय समिति (भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू)
डॉ. अनुजा अखौरी, सहायक प्रोफेसर
डॉ. बिजॉय रक्षित, सहायक प्रोफेसर
शालिन एस. नायर, प्रशासनिक अधिकारी जन-सम्पर्क एवं प्रशासन
आशीष कु. ईश्वर, एलडीसी

संकलन समिति
आशीष कुमार ईशर, शलिन सशिधरन नायर

प्रतिलिप्यधिकार
भारतीय प्रबन्धन संस्थान जम्मू
सर्वाधिकार सुरक्षित
इस पुस्तक की किसी भी सामग्री, कविता, लेख, आलेख आदि को कॉपीराइट स्वामी की बिना लिखित अनुमति के किसी भी रूप में जैसे फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, जेटोग्राफी या अन्य किसी रूप में किसी भी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक या मेकैनिकल रूप में शामिल कर पुनरूत्पादित नहीं किया जा सकता है।

मूल रूप से भारत में प्रकाशित
पुस्तक : पत्रिका

© भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
संस्करण: तृतीय
वर्ष: 2024

प्रकाशक: भारतीय प्रबन्धन संस्थान जम्मू

पुस्तक डिजाइन एवं मुद्रकः
सिग्नस एडवरटाइजिंग (इंडिया) प्रा. लि. बंगाल इको इं टेलिजेंट पार्क , टावर-1, 13वां तल, यूनिट 29,
ब्लॉक ईएम-3, सेक्टर-V, साल्टलेक, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 70009।

सम्पादकीय

त्रिकुटा
“आत्मदीप: भव”

हमारे संस्थान की हिन्दी पत्रिका ‘त्रिकुटा ‘ की तीसरी संस्करण को प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

पत्रिका के नाम के चयन के लिए संस्थान के सभी सदस्यों से सुझाव आमंत्रित किए गए थे। कुल 50 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं, जिनमें से श्री आशीष कुमार ईशर द्वारा सुझाए गए “त्रिकुटा” नाम और टैगलाइन “आत्मदीप: भव” का चयन किया गया। त्रिकुटा पर्वत भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य में स्थित है। यह हिमालय पर्वत श्रृंखला का हिस्सा है और पीर पंजाल रेंज से शिवालिक पहाड़ियों तक फैला हुआ है। कैलाश (6,697 मीटर), शिवलिंग (6,590 मीटर), और मेरू (6,481 मीटर) त्रिकुटा पर्वत की तीन प्रमुख चोटियाँ हैं। पहाड़ ग्लेशियरों का घर हैं, जिसमें मंदाकिनी नदी के स्रोत चोराबारी ग्लेशियर शामिल हैं। त्रिकुटा ब्रह्मा के घर महा मेरू (मेरू पर्वत) के आसपास के बीस पहाड़ों में से एक है। पहाड़ को दिव्य देवी दुर्गा का दसरा घर माना जाता है। वहू बुराई को समाप्त करने के लिए तीन देवियों की शक्ति से बनाई गई थी; इसलिए पर्वत को त्रिकु टा कहा जाता है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू परिसर त्रिकुटा पहाड़ों की तलहटी में स्थित है। त्रिकुटा पहाड़ों की ऊं चाई भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है जो प्रबंधकों और उद्यमियों को विकसित करने की ओर सदैव अग्रसर है। पत्रिका की टैगलाइन ‘आत्मदीप: भव’ का अर्थ है स्वयं अपना प्रकाश बनना।

हम अपने संस्थान के निदेशक प्रो. (डा.) बी. एस. सहाय जी को सहृदय धन्यवाद देते हैं, जिनके बहुमूल्य सुझाव से पत्रिका का तीसरा अंक अभिरूपित हो पाया है। साथ ही हम उन सभी को सविनय आभार व्यक्त करते है जिन्होंने कविता, लेख, कहानी तथा चित्र द्वारा अपने विचारों को पत्रिका के पहले संस्करण में साझा किया है।

यद्यपि पत्रिका के प्रकाशन में हमनें सतर्क ता बरती है, फिर भी अगर कोई त्रुटि रह गयी हो तो हमें खेद है। आपसे अनुरोध है की पत्रिका को और बेहतर बना सके इसके लिए आप अपने सुझाव पाठक और आलोचक, दोनों प्रारूप में हमसे साझा करें (hindipatrika@iimj.ac.in)।

साधुवाद।

सम्पादकीय समिति

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

अनुक्रमणिका

निदेशक का संदेश	3
अन्वेश (लेख)	4
◆ **भारतीय प्रबंधन संस्थान: अवलोकन** - *डॉ अनुजा अखौरी, सहायक प्रोफेसर*	4
◆ **चिपक अभियान** - *लक्ष्मी नारायण जाबड़ोलिया, विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी*	6
◆ **सुनील दत्त: स्वतंत्रता सेनानी, अभिनेता और सच्चे देशभक्त** - *शलिन सशिधरन नायर, प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन*	8
◆ **आस्था और शांति का दिव्य निवास: बाबा धनसार** - *आशीष कुमार ईशर, एलडीसी*	11
संस्थान दर्पण	13
विचार धारा (कविताएँ)	15
◆ **संघर्ष का सफरनामा** - *शलिन सशिधरन नायर, प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन*	15
◆ **अगले मोड़ पे सुकून मिलेगा** - *पवन कुमार, इ.एम.बी.ए. (कॉर्पोरेट अफेयर्स एंड मैनेजमेंट)*	16
◆ **आरना** - *अभय कुमार अवस्थी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी*	16
◆ **वो किश, मिस करते हो कि नहीं ...?** - *लक्ष्मी नारायण जाबड़ोलिया, विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी*	17
◆ **भारतीय संस्कृति** - *शलिन सशिधरन नायर, प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन*	18
◆ **हर बार मै चुप हो जाता हूं / कुछ बयां न कर पाओगे** -*धर्मेश बारोडिया, विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी*	19
◆ **हौसलों की रोशनी: विकसित भारत की ओर .....** -*डॉ प्रतीक माहेश्वरी, सहायक प्रोफेसर*	20

प्रो. बी. एस. सहाय
निदेशक

निदेशक का संदेश

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू, जिसे 2016 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित किया गया था, भारत के सबसे युवा आईआईएम में से एक है। हालांकि यह अपेक्षाकृत नया है, आईआईएम जम्मू तेजी से एक प्रमुख व्यावसायिक संस्थान बनने की दिशा में अग्रसर है, जो अनुसंधान और परामर्श पर विशेष ध्यान देता है।

45 छात्रों से शुरू होकर, आईआईएम जम्मू अब लगभग 1000 छात्रों की संख्या पर पहुंच गया है। संस्थान विभिन्न कार्यक्रम प्रदान करता है जिनमें एमबीए, आईपीएम, पीएचडी (पूर्णकालिक), पीएचडी (कार्यरत पेशेवरों के लिए), ईएमबीए, और अल्पकालिक प्रमाणन पाठ्यक्रम शामिल हैं। भारत के माननीय प्रधानमंत्री के "विकसित भारत" दृष्टिकोण के अनुरूप, आईआईएम जम्मू विकास और उन्नति को प्रोत्साहित करने के लिए समर्पित है। आईआईएम जम्मू में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए इनक्यूबेशन और कौशल विकास केंद्र की स्थापना की गई है। यह केंद्र नवाचारपूर्ण विचारों को पोषित करने और भविष्य के प्रबंधकों को VUCA (वोलैटाइल, अनिश्चित, जटिल, और अस्पष्ट) व्यावसायिक दुनिया में सफलतापूर्वक नेविगेट करने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने का लक्ष्य रखता है। हमारा मिशन ऐसे मैनजमेंट लीडरस का विकास करना है जो अनुकूलनशील, रणनीतिक विचारक और आधुनिक व्यावसायिक वातावरण की जटिलताओं को संभालने में सक्षम हों।

"The best way to predict the future is to create it."- Peter Drucker

आईआईएम जम्मू में, हम न केवल अपने छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं, बल्कि उन्हें इसे आकार देने के लिए सशक्त बना रहे हैं। अकादमिक कठोरता, व्यावहारिक अनुभव और नवाचार पर ध्यान केंद्रित करके, हमारे छात्र गतिशील व्यावसायिक दुनिया की चुनौतियों और अवसरों को संभालने के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं।

"A leader is one who knows the way, goes the way, and shows the way."- John C. Maxwell

हमारे सम्मानित संकाय और मजबूत पाठ्यक्रम सुनिश्चित करते हैं कि हमारे स्नातक न केवल जानवान हैं बल्कि आत्मविश्वास और दृष्टि के साथ नेतृत्व करने में भी सक्षम हैं। हमारे व्यापक कार्यक्रमों और पहलों के माध्यम से, आईआईएम जम्मू भविष्य के सक्षम प्रबंधकों और नेताओं के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देना जारी रखेगा। हम एक ऐसा शिक्षण वातावरण बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो आलोचनात्मक सोच, नैतिक निर्णय लेने और वैश्विक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता हो।

आईआईएम जम्मू उत्कृष्टता का प्रतीक है, प्रतिभा को पोषित करता है और व्यावसायिक दुनिया में नवाचार को बढ़ावा देता है। हमारे स्नातक न केवल भविष्य के प्रबंधक हैं; वे एक प्रगतिशील और समृद्ध भारत के वास्तुकार हैं।

अन्वेश (लेख)

भारतीय प्रबंधन संस्थान: अवलोकन

भारत, एक प्राचीन और अद्वितीय राष्ट्र है, जिसकी प्रतिष्ठा सभ्यता और संस्कृतियों का समागम है जो इसे अद्वितीय बनाती है। इस आधुनिक युग में, जिसमें सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के सफल अभियानों का विवेचन किया जाता है, भारत का इतिहास एकता और समाज के सृजनात्मक तांत्रिकताओं के संगम पर निरंतर ध्यान केंद्रित करता है। इस उत्कृष्ट भारत के आँगन में स्थित है, अत्यंत मनोहार, जम्मू और कश्मीर।

हिमालय के आलिंगन में बसा केंद्र शासित प्रदेश, जम्मू एक जीवित कैनवास के रूप में उभरता है, जहां इतिहास, आध्यात्मिकता, और प्राकृतिक सौंदर्य का मनोहारी संगम है। जैसे ही आप इस मोहक क्षेत्र में कदम रखते हैं, एक ऐसी यात्रा शुरू होती है जो समय को पार करती है और आपको सांस्कृतिक ऐश्वर्य के दिल में ले जाती है। जम्मू, जिसे अक्सर "मंदिरों का शहर" कहा जाता है, दिव्य शांति के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है। वैष्णो देवी जैसे पवित्र स्थलों की यात्रा शुरू होते ही हवा आध्यात्मिकता से भर जाती है।

वर्त्तमान में जम्मू, 'सिटी ऑफ़ टेम्पल्स' ही नहीं अपितु 'टेम्पल ऑफ़ लर्निंग्स' बन गया है। यह देश का पहला शहर है जहाँ तीन इंस्टिट्यूट ऑफ नेशनल इम्पोर्टेंस (भारतीय प्रबंधन संस्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान) जम्मू -कश्मीर के विकास में गहरा प्रभाव डाल रहे हैं।

त्रिकुटा पर्वत श्रृंखला के उच्चतम शिखरों की भव्यता विश्व की आँखों को मोहित करती है। उस दिशा में स्थित 'जगती' के उस चेहरे पर, सुंदर सौंदर्य की प्रभावशाली संगीत बज रहा है। यहाँ, इस प्रतिष्ठित संस्था, जिसे हम सादरता से भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू के नाम से जानते हैं, ने अपना निवास स्थान बनाया है। इस प्राकृतिक सौंदर्य के बीच, जैसे स्वर्ग से आई एक मोहक ध्वनि के साथ, आईआईएम जम्मू एक महान और गर्वशाली संस्था के रूप में स्वयं को स्थापित किया है।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2016 में स्थापित भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू का शैक्षिक सत्र 2016 में 47 विद्यार्थियों के साथ आरंभ हुआ और वर्तमान में इसके विभिन्न कार्यक्रमों में 1200 से अधिक विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। भारतीय शिक्षा के परिवर्तनमय परिप्रेक्ष्य में, भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप नवाचार और पुनर्गठन का एक उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत करता है। एमबीए, एग्जीक्यूटिव एमबीए, पीएचडी के अतिरिक्त, भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने प्रबंधन में 5-वर्षीय समेकित कार्यक्रम भी आरंभ किया है। इसी प्रकार, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जम्मू के साथ दोहरी डिग्री पाठ्यक्रम (बीटेक + एमबीए) का निर्माण किया गया है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान संस्थान जम्मू और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जम्मू के साथ मिलकर एमबीए (अस्पताल प्रशासन और स्वास्थ्य देखभाल प्रबंधन) कार्यक्रम को शुरू करने वाला भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू पूरे देश में एकमात्र संस्थान है।

जब विचारकों का विचार आगे बढ़ता है, तो हमें वास्तविकता के साथ स्पष्टता बखूबी प्राप्त होती है कि 2016 में भारतीय प्रबंधन संस्थान के प्रथम शैक्षणिक सत्र ने 47 प्रतिभावान छात्रों को अपने पवित्र क्षेत्र में अवतरित किया, और आज इस संस्थान के विभिन्न प्रोग्रामों में 1200 से अधिक विद्यार्थियों ने अपना समय और योग्यता निवेश किया है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दिशा को अपने स्वयं के उज्ज्वल सूरज की ओर अग्रसर करते हुए, भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू को एक नवीनतम अनुभव का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इसी प्रकार, इस महान संगठन ने एमबीए, एग्जीक्यूटिव एमबीए, पीएचडी के अलावा, प्रबंधन के पांच वर्षीय एकीकृत प्रोग्राम में अपनी एक प्रायोजन्म अनुभव की शुरुआत की है। और इसी के साथ, आईआईटी जम्मू के साथ योजना बनाई गई है कि डुअल डिग्री कोर्स (बीटेक + एमबीए) की योजना बनाई जाए। इसके साथ ही, आईआईएम जम्मू ने एम्स जम्मू और आईआईटी जम्मू के साथ मिलकर एमबीए (हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन एंड हेल्थ केयर मैनेजमेंट) प्रोग्राम की शुरुआत की है। इस रूप में, आईआईएम जम्मू ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अद्वितीयता को साबित करते हुए, देशव्यापी एकमात्र संस्थान बन गया है, जो न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि समाज के समर्थन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू का दृढ़ विश्वास है कि नारी शिक्षा का अभाव रहते समाज का उन्नयन असंभव है और युग की आवश्यकता है कि पुरुष और स्त्री के बीच कोई अन्तर न हो। शिक्षा ही वह साधन है जो नारी को समर्थ बनाता है। इसलिए भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हुए अपने विद्यार्थियों का अनुपात समान रखा है।

संस्थान का स्थायी आधुनिक परिसर जम्मू नगर के जगती क्षेत्र में पाँच सौ करोड़ की लागत से दो सौ एकड़ भूमि पर निर्मित है। यह परिसर जम्मू-कश्मीर की नवीनतम वास्तुकला, संस्कृति और धरोहर का मनोहर संगम है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू को तीसरी पीढ़ी के भारतीय प्रबंधन संस्थान में दूसरा स्थान और सभी भारतीय प्रबंधन संस्थान में 15वां स्थान प्राप्त है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू के इस कैंपस को भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा पाँच सितारा रेटेड स्थायी कैंपस के अनुरूप रचा गया है। इसके अतिरिक्त, भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने पर्यावरण के प्रति समर्पण के साथ सौर ऊर्जा पैनल, कूड़ा प्रबंधन, अपशिष्ट नियंत्रण, अपशिष्ट जल उपचार एवं जैविक उद्यान आदि की व्यवस्था की है। इससे प्राकृतिक संसाधनों, आवासों और जैव विविधता का संरक्षण हुआ है और मृदा अपरदन कम हुआ है। कैंपस में प्रशासनिक भवन, पुस्तकालय, एम डी पी भवन, अतिथि गृह, मेस तथा भोजनालय, छात्रावास, रंगमंच, फुटबॉल मैदान, क्रिकेट मैदान, बैडमिंटन कोर्ट सहित अनेक अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं। पुस्तकालय हर शैक्षिक संस्थान की आत्मा है। नवनिर्मित भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू का 'स्टेट ऑफ द आर्ट' आधुनिक पुस्तकालय 'नालंदा', संसाधनों के समृद्ध संग्रह और नवीनतम आधारभूत सुविधाओं के साथ, उत्कृष्ट शिक्षण वातावरण प्रदान करता है। इस प्रकार, भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने एक समृद्ध और स्थायी शिक्षा संस्थान के रूप में अपनी पहचान बनाई है, जो विद्यार्थियों को व्यक्तिगत और व्यावसायिक उन्नति के लिए एक सुरक्षित माहौल प्रदान करता है।

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू का सिद्धांत है 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात वही विद्या है, जो बंधनों से मुक्त करती है। आज के परिपेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि समाज को गरीबी, असमानता, भेदभाव से मुक्त करना ही विद्या का वास्तविक लक्ष्य है। इस संदर्भ में भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने अपने विद्यार्थियों को स्टार्ट-अप इंडिया की पहल को प्रोत्साहित करते हुए, उन्हें नौकरी करने वालों की बजाय नौकरी देने वालों में तब्दील करने में सहायता की है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू, अपनी सीएसआर इनिशिएटिव के रूप में, जम्मू-कश्मीर के केंद्र शासित प्रदेश में सतत विकास का मार्ग प्रशस्त करते हुए विलेज एडॉप्शन स्कीम के साथ ही साथ युवाओं के कौशल सेट को बढ़ाने के लिए 'सामुदायिक नेतृत्व कार्यकारी पाठ्यक्रम' का आयोजन किया जाता है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से, युवा प्राप्त करते हैं उनके उद्यमिता, नेतृत्व, और सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में अद्यतन ज्ञान और कौशल, जो उन्हें स्वयं को सशक्त और सक्षम बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। इससे न केवल उनका व्यक्तित्व विकसित होता है, बल्कि वे भविष्य के नेताओं और उद्यमियों के रूप में उभरते हैं, जो जम्मू-कश्मीर के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रक्रिया में, भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू न केवल युवाओं को उत्साहित कर रहा है, बल्कि क्षेत्र के समृद्ध भविष्य की ओर एक महत्वपूर्ण कदम भी बढ़ा रहा है।

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने उद्यमिता और समावेश के केंद्रों: Centre for Entrepreneurship, Innovation & Skill Development और Centre for Small Business Development की स्थापना करके उद्यमिता की अर्थव्यवस्था को जम्मू और कश्मीर ही नहीं, बल्कि समस्त भारत में प्रोत्साहन देने का निर्णय लिया है। इससे जम्मू और कश्मीर के उद्योगों को जो कई वर्षों से सुप्त थे, उन्हें कौशल विकास और उद्यमिता विकास के कार्यक्रमों का लाभ मिलेगा। इससे उनकी ऊर्जा और उत्साह नवीनीकरण होगा, और वे स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी कुशलता और प्रतिष्ठा को ऊंचा उठाने का अवसर पाएंगे। इस प्रकार, आईआईएम जम्मू ने उद्यमिता के क्षेत्र में एक नवीन उदारता और उत्साह का संचार किया है, जो क्षेत्र के लोक-हित और राष्ट्र-निर्माण को समृद्धि की ओर ले जाएगा।

जातिगत भेदभाव को कम करने और राष्ट्रीय सामाजिक कार्यक्रमों को बढ़ाने के प्रयासों के बावजूद, भारत के दलित, एवं जनजाति शेष भारत की तुलना में कम नामांकन दर प्राथमिक शिक्षा और जीविकापोर्जन तक पहुंच की कमी का अनुभव कर रहे हैं। "डायवर्सिटी सेल" का उद्घाटन 9 जून 2022 को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द द्वारा किया गया। उद्यमिता की बारीकियों को जानने और समझने के लिए एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करके समाज के वंचित समुदायों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए विविधता और समावेशन केंद्र की स्थापना की गयी है।

आत्म-प्रकाशन को गुरुकुल शिक्षा परंपरा का अभिन्न अंग बताया। भारतीय प्रबंधन संस्थानजम्मू की सेंटर फॉर हैप्पीनेस: आनन्दम ने दुनिया भर में शिक्षा को एक जीवंत शक्ति बनने और स्वयं को जानने का मार्ग प्रशस्त किया है। "आनंदम" एक शुद्ध चेतना है जिसका लक्ष्य केवल खुशी नहीं है बल्कि सत्य को जानना, अच्छा करना और आसपास की सुंदरता का आनंद लेना है। "सर्वभताहितेरतः" का अर्थ है सदैव सभी की भलाई के लिए लगे रहना। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू का लक्ष्य सभी के लिए समग्र कल्याण प्राप्त करना है। यह कदम हमारी शिक्षा प्रणाली को नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों के समय की तरह नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। भारत का इतिहास और विरासत एकता और कर्तव्यनिष्ठा का प्रतिक रहा है उसको युवा पीढ़ी में आत्मसात करने के लिए इनोवेटिव टीचिंग pedagogy के साथ मानवता, समाज और राष्ट्र की सेवा जैसे मूल्यों को व्याख्यान के माध्यम से विद्यार्थियों में समावेश किया जाता है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू जल्द ही ना सिर्फ जम्मू कश्मीर क्षेत्र में अपितु पूरे देश के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अनुसंधान का प्रमुख केंद्र बन गया है।

डॉ अनुजा अखौरी
सहायक प्रोफेसर

चिपक अभियान

हमारी बाल्यावस्था में माता जी मेहनत मज़दूरी करने जाती तो शदह चिपका कृत्रिम निप्पल हमारे मुँह में चिपका जाती, हम उसी को शैशवकाल का सुख समझकर चूसते रहते। अनाक्षर बाबूजी को साहूकार ने 100 रुपये के आगे एक और जीर चिपकाकर कई बार चपत लगायी, आज भी चिपक जाल में फंसे हुए है। बचपन में पाठशाला में फटी निक्कर (हाफपेंट) को कई बार पाती चिपकाकर पहन लिया करते थे, नहीं पहनने पर पिताजी गाल पर रपट चिपका दिया करते थे, तब माताजी के चिपक कर सुबक सुबक कर रो लिया करते थे। विद्यालय शिक्षा के दौरान गृहकार्य या इंतिहान में भी होनहार बालक की उत्तर पुस्तिका से तांक झांक कर हम जैसे छात्र भी वैसा ही चिपका दिया करते थे, कुछ समझ में नहीं आता तो ऐसी लिखावट में लिखते कि मास्टरजी तो क्या, खुद भी नहीं समझ पाते कि क्या लिखे है फिर मास्टरजी हमारे गलों पर दो रपट चिपका दिया करते। महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय की शिक्षा में भी साप्ताहिक / पाक्षिक असाइनमेंट्स बनाता कौन, नाम कोई और चिपका देते।

एक बार तो निठ्ठले लेखक ने हद कर दी, किसी और का असाइनमेंट्स बिना सोचे समझे अपने नाम से चिपका दिया, विषय ऊष्मप्रवैगिकी की जगह इलेक्ट्रोमैग्नेटिक्स का नाम चिपका दिया था, कक्षा में प्रोफ़ेसर साहेब की डांट तो पड़ी सो पड़ी ,सुन्दर बालाओं के सामने फजीयत हुई सो अलग। खेर हमारी छोड़िये, भारत में तो कई मान्यवरों पर डिग्रीयां / थीसिस चिपकाने का आरोप लगाया जाता है। वैसे विदेश भी चिपकाने के मामले में अछूते नहीं रहे है, महान वैज्ञानिक टेस्ला के लगभग 19 अविष्कारों को अन्य वैज्ञानिकों ने अपने नाम से चिपका लिया और आज किताबों में उन्ही के चिपके हुए नाम आविष्कारक के रूप में चल रहे है। राजनीती में भी चिपकाने का काम खूब चल रहा है।चरखे में गांधीजी की जगह किसी अन्य नेताजी की चिपका फोटो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुई। आईटी सेल की मदद से कई वीडियो / फोटोज एडिट कर व चिपका कर नाम- बदनाम, अर्थ - अनर्थ करने की झड़ी लगी हुई है। भैया , मानो या न मानो जिसकी जितनी आईटी सेल मज़बूत होगी, वो उतना चिपकायेगा और जीत का डंका उसी का बजेगा। गली के बातूनी नेताजी भी अपना नाम बड़े नेताजी के नाम के नीचे चिपकाकर मन में लड्डू फोड़ लेते हैं ।

बड़े नेताजी कोतो मालूम ही नहीं कि चिपका अभियान चल रहा है और कभी तो ये भी भूल जाते है कि चिपकाना क्या है , क्योंकि नक़लमें भी अक्ल की जरूरत होती है भैया, अर्थ का अनर्थ होते देर नहीं लगती। मनाना जन्मदिन था , मन गई पुण्यतिथि। बाप रे बाप ! सियासते भी चिपकाने के मामले में पीछे नहीं है, योजनाए किसी और की, नाम किसी और का चिपकाया हुआ , आप खूब देख सकते है। नौकर शाही में भी चिपकाने का काम खूब चलता है, एक दूसरे के कार्य चिपकाकर खूब प्रमोश पा लेते है। ऊपर के अधिकारी अपनी दफ्तर की टेंशन नीचे वालों को चिपका देते है। आमजन के आकाओं की तो बात ही निराली है , आया राम गया राम हो रहे है , मतलब के लिए किसी भी पार्टी से चिपक जाते है, मतलब नहीं चिपक पाए तो दूसरे दल से चिपक लेते है। अफसर कुर्सियों से चिपके रहते है । रिटायरमेंट के बाद किसी सामाजिक संगठन से चिपक जाते है, लेकिन समाज से नहीं चिपकते।

लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहे जाने वाले , महान पत्रकारिता में भी चिपकाने का कार्य बखूबी देखा जा सकता है। धार्मिक कथाओं में भी कई भाग चिपके हुए का पूरा पूरा शक मालूम पड़ता है। बॉलीवुड भी चिपका अभियान से अछूता नहीं रहा , उसमे भी कई स्क्रिप्ट्स एक दूसरे के चिपकाने का आरोप लगा है, कभी कभार तो केवल पात्र बदलते है स्टोरी स्टोरी हूबहू चिपकी हुई लगती है। कई धनाढ्य लोग तो भारत को ही चपत चिपका गए और विदेशों से चिपके पड़े है। व्हाट्सप्प/ फेसबूकिया यूनिवर्सिटी तो मानो जैसे चिपका प्लेट फॉर्म बने हुए है, लोग चल दूर भाष यन्त्र से ऐसे चिपके रहते है जैसे महीनों से बिछड़े प्रेम प्रेमिका मिलने पर चिपकते है। कोई कुछ भी चिपका कर मन बहला लेता है।

आज कल हर कोई बस चिपकने / चिपकाने में ही लगे हुए है, जिसको जो मौका मिला, जैसे मिला, जहाँ मिला , कुछ भी मिला बस चिपका देता है। अधिकतर युवाको तो अपने स्वयं या परिवारजनो की फोटो को अलग अलग एंगल में चिपकाने से ही फुरसत नहीं मिलती जैसा की फिल्म राजाबाबू में श्रीमान अभिनेताजी चिपकाया करते थे। वैसे चिपकाने / चिपकने से कभी काम निकल भी जाते है । चिपकना / चिपकाना एक कला है, हर कोई नहीं चिपका सकता । कोई सही के साथ चिपकता है तो कोई अपने मतलब के लिए गलत से चिपकता है। बुराई के विरुद्ध सबके होठ चिपक जाते है, सही के साथ बिरले ही चिपकते है, जैसा पर्यावरण संरक्षण के लिए चिपका आंदोलन। सही के साथ देने वाले बेचारे साधारण सी जिंदगी से चिपककर रह जाते है। लेखक का चिपकने / चिपकाने के क्षेत्र में तजुरबा कम है, उम्र भी कम है, ज़मीर भी इज़ाज़त नहीं देता, अन्यथा आज नामी यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर पद पर चिपके हुए होते ।

कृपया पोस्ट को चिपक अभियान प्रेमी दिल से न चिपकाये, लेखन का उद्देश्य मात्र यहाँ चिपकाना नहीं है बल्कि लेखक का मानना है कि चिपका हुआ कार्य कोई स्थाई जागृति नहीं ला सकता। असत्य की नीव पर ऊँची मीनारे नहीं चिपकाई जा सकती। महापुरुषों के साहित्य से चिपकना पड़ेगा। उनके सिद्धांतों को जीवन से चिपकाना पड़ेगा, है। कोरोना भी यही सन्देश दे के गया है कि गलत के साथ चिपको मत।

गजोदर भैया, इधर उधर की बातें छोड़िए, मौका मिला है तो मैं भी अब बिना समय गंवाए एक लेखन हिंदी पत्रिका; त्रिकुटा में चिपका ही देता हूँ।

लक्ष्मी नारायण जाबड़ोलिया
विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी

सुनील दत्त: स्वतंत्रता सेनानी, अभिनेता और सच्चे देशभक्त

सुनील दत्त, जो बहुमुखी प्रतिभा और समर्पण के पर्याय हैं, केवल भारतीय फिल्म उद्योग में एक सितारा ही नहीं थे, बल्कि एक उत्साही देशभक्त और स्वतंत्रता सेनानी भी थे। 6 जून 1929 को खुर्द गांव, पंजाब प्रांत, ब्रिटिश भारत में बलराज दत्त के रूप में जन्मे, एक छोटे से गांव से एक प्रिय राष्ट्रीय आइकन बनने तक की उनकी जीवन यात्रा प्रेरणादायक और सराहनीय है।

प्रारंभिक जीवन और संघर्ष

सुनील दत्त का प्रारंभिक जीवन भारत के स्वतंत्रता संग्राम के उथल-पुथल वाले दौर से प्रभावित था। 1947 में भारत के विभाजन के दौरान उनका परिवार उखड़ कर मुंबई आ गया। इस दौर ने उनमें धैर्य और देशभक्ति की गहरी भावना भर दी। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद, दत्त ने अपनी शिक्षा जारी रखी और जय हिंद कॉलेज, मुंबई से स्नातक की पढ़ाई पूरी की, जहां उनकी अभिनय और थिएटर में रुचि विकसित हुई।

फिल्मों में प्रवेश

दत्त का फिल्म उद्योग में प्रवेश संयोगवश हुआ। रेडियो शो होस्ट के रूप में शुरुआत करते हुए, उन्होंने अपनी गहरी आवाज और करिश्माई उपस्थिति से फिल्म निर्माताओं का ध्यान आकर्षित किया। उनकी फिल्मी शुरुआत 1955 की "रेलवे प्लेटफार्म" से हुई, लेकिन 1957 की क्लासिक "मदर इंडिया" ने उन्हें सुपरस्टार बना दिया। "मदर इंडिया" में उन्होंने बिरजू का किरदार निभाया, जो नर्गिस के किरदार का विद्रोही बेटा था, जो बाद में उनकी वास्तविक जीवन की पत्नी बनीं। यह फिल्म न केवल एक बड़ी हिट थी, बल्कि भारतीय सिनेमा का एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर भी थी, जिसे अकादमी पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था।

एक बहुमुखी अभिनेता

सुनील दत्त का अभिनय करियर चार दशकों से अधिक समय तक फैला रहा, जिसमें उन्होंने रोमांटिक लीड से लेकर गहन किरदारों तक के विभिन्न भूमिकाओं को निभाया। उनकी कुछ प्रमुख फिल्में "साधना" (1958), "मुझे जीने दो" (1963), "खानदान" (1965), और "पड़ोसन" (1968) शामिल हैं। विविध किरदारों में पूरी तरह डूब जाने की उनकी क्षमता ने उनके अभिनय की गहराई और सीमा को दर्शाया। उन्होंने अपने प्रदर्शन के लिए कई पुरस्कार जीते, जिनमें फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार भी शामिल है।

निर्देशक के रूप में पदार्पण

सुनील दत्त ने "यादें" (1964) से निर्देशन में पदार्पण किया, जिसमें वह एकमात्र अभिनेता थे। इस अनूठी फिल्म ने न्यूनतम कलाकारों वाली कथा फिल्म के लिए गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में जगह बनाई। फिल्म की नवाचारी दृष्टि ने दत्त की रचनात्मकता और सिनेमा की सीमाओं को आगे बढ़ाने की उनकी इच्छा को उजागर किया।

परदे से परे

जबकि सुनील दत्त के सिनेमा में योगदान को व्यापक रूप से सराहा गया है, उनके सामाजिक कारणों और राष्ट्र के प्रति समर्पण को भी समान रूप से महत्व दिया गया। 1984 के सिख विरोधी दंगों के दौरान, उन्होंने सिख परिवारों को हिंसक भीड़ों से बचाने में मदद की, जिससे उनकी साहस और मानवता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन हुआ। 1993 के लातूर भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, जहां उन्होंने राहत प्रयासों का आयोजन किया, उनके सच्चे मानवतावादी होने की स्थिति को और मजबूत किया।

राजनीतिक करियर और सार्वजनिक सेवा

अभिनय से राजनीति में दत्त का संक्रमण राष्ट्र की सेवा की इच्छा से प्रेरित था। वह 1984 में मुंबई उत्तर-पश्चिम निर्वाचन क्षेत्र से संसद के लिए चुने गए। उल्लेखनीय रूप से, वह बार संसद सदस्य बने और कभी चुनाव नहीं हारे, जो उनकी लोकप्रियता और समर्पण का प्रमाण है। संसद सदस्य के रूप में, उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र के कल्याण के लिए अथक परिश्रम किया और उनकी ईमानदारी और समर्पण के लिए जाने जाते थे। 2004 में, उन्हें युवा मामलों और खेल मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया, जहां उन्होंने भारत में खेल और युवा कल्याण को बढ़ावा देने का काम किया।

अपने राजनीतिक करियर के अलावा, सुनील दत्त 1981 से 1982 तक मुंबई के शेरिफ के रूप में भी कार्यरत रहे। यह पद, जो काफी हद तक मानद होता है, समुदाय की सेवा के लिए व्यक्तियों को मान्यता देता है। अपने कार्यकाल के दौरान, दत्त ने सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया और शहर में शांति और सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने का काम किया।

एकता के लिए शांति यात्रा

1987 में, सुनील दत्त ने अपनी बेटी नम्रता के साथ मुंबई से अमृतसर तक लगभग 2,000 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए एक उल्लेखनीय शांति यात्रा शुरू की। यह यात्रा भारत में बढ़ती सांप्रदायिक हिंसा के खिलाफ एक विरोध थी। शांति यात्रा ने दत्त की राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पण और सांप्रदायिक सद्भाव लाने के उनके प्रयासों को उजागर किया। कठिनाइयों से भरी उनकी यात्रा ने उनकी दृढ़ता और शांति के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाया।

नरगिस दत्त कैंसर फाउंडेशन

1981 में अपनी पत्नी नरगिस को कैंसर से खोने के बाद, सुनील दत्त ने उनकी स्मृति में नरगिस दत्त मेमोरियल कैंसर फाउंडेशन की स्थापना की। फाउंडेशन का उद्देश्य विशेष रूप से वंचितों के लिए कैंसर रोगियों को चिकित्सा देखभाल और सहायता प्रदान करना है। दत्त के प्रयासों ने अनगिनत व्यक्तियों को आवश्यक उपचार प्राप्त करने में मदद की है और कैंसर की रोकथाम और देखभाल के बारे में जागरूकता बढ़ाई है।

सुनील दत्त के परोपकारी प्रयास भारतीय सीमाओं से परे थे। उन्होंने पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर इमरान खान का लाहौर में शौकत खानम मेमोरियल कैंसर अस्पताल बनाने के प्रयास में समर्थन किया। इस कारण के प्रति दत्त की प्रतिबद्धता ने राष्ट्रीय सीमाओं को पार करने वाले मानवीय प्रयासों में उनके विश्वास को प्रदर्शित किया, जो स्वास्थ्य और कल्याण के लिए उनकी वैश्विक दृष्टि को दर्शाता है।

न्याय और ईमानदारी को बनाए रखना

सुनील दत्त के जीवन का एक सबसे सराहनीय पहलू न्याय और ईमानदारी के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता थी, भले ही इसमें उनके अपने परिवार की बात क्यों न हो। 1993 के मुंबई बम धमाकों के दौरान उनके बेटे, संजय दत्त, पर गंभीर कानूनी आरोप लगने के बावजूद, सुनील दत्त ने न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित करने के लिए अपनी राजनीतिक शक्ति का उपयोग नहीं किया। उनकी अपनी राजनीतिक पार्टी सत्ता में थी, लेकिन सुनील दत्त ने सुनिश्चित किया कि संजय किसी अन्य नागरिक की तरह मुकदमे का सामना करें। इस निर्णय ने कानून के शासन में उनके विश्वास को रेखांकित किया और नैतिक अखंडता का एक शक्तिशाली उदाहरण स्थापित किया।

व्यक्तिगत जीवन और विरासत

सुनील दत्त का व्यक्तिगत जीवन परीक्षणों और सफलताओं से भरा रहा। नरगिस के साथ उनकी शादी बॉलीवुड के सबसे चर्चित संबंधों में से एक थी। साथ में, उन्होंने कई चुनौतियों का

सामना किया, जिसमें नरगिस की कैंसर से लड़ाई भी शामिल थी, जिसके कारण वह 1981 में अंततः निधन हो गईं। दत्त की संस्मरण "टू मॉम, विद लव" उनकी प्रिय पत्नी और उनके स्थायी प्रेम के प्रति एक भावनात्मक श्रद्धांजलि है।

"रॉकी," जो उनके बेटे संजय दत्त की पहली फिल्म थी, के प्रीमियर के दौरान, सुनील दत्त ने अपनी याद में एक खाली कुर्सी अपने बगल में रखी। यह कुर्सी नरगिस की उपस्थिति और उनके परिवार के लिए उनके अटूट समर्थन का प्रतीक थी। यह एक स्पर्शपूर्ण क्षण था जिसने उनकी दिवंगत पत्नी के प्रति दत्त के गहरे प्रेम और सम्मान को उजागर किया।

सुनील दत्त के करीबी मित्र, अभिनेता राजेंद्र कुमार, ने उनके जीवन के उतार-चढ़ाव के दौरान उनके साथ खड़े रहे। उनकी दोस्ती एक मजबूती का स्तंभ थी, जिसने व्यक्तिगत और पेशेवर चुनौतियों के सामने स्थायी बंधनों का मूल्य प्रदर्शित किया।

1968 में, उन्हें भारत सरकार द्वारा कला में उनके योगदान और राष्ट्र के प्रति सेवा को मान्यता देते हुए पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

सुनील दत्त का 25 मई 2005 को निधन हो गया, लेकिन उनकी विरासत आज भी प्रेरित करती है। उनके बेटे, संजय दत्त, और बेटियां, प्रिया और नम्रता, उनकी दृढ़ता और प्रतिबद्धता की भावना को आगे बढ़ा रही हैं। सुनील दत्त का जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि सच्ची महानता दूसरों की सेवा करने और अपने सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध रहने में निहित है।

शलिन सशिधरन नायर
प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

आस्था और शांति का दिव्य निवास: बाबा धनसार

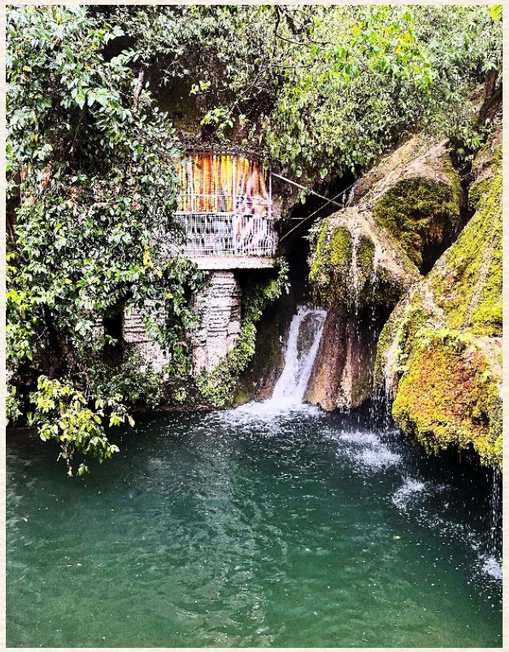

हिंदू भगवान शिव को समर्पित बाबा धनसार का पवित्र मंदिर, रियासी जिले के जम्मू और कश्मीरी गांव करूआ में स्थित है। इस पवित्र स्थल पर प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक महत्व का विलय होता है, जो भक्तों और प्रकृति के प्रति उत्साही दोनों को आकर्षित करता है। यह रियासी से लगभग 10 किलोमीटर और कटरा से 14 किलोमीटर दूर है।

बाबा धनसर: एक लोक ताले

पौराणिक कथा है कि भगवान शिव ने देवी पार्वती को अपनी अमरता की कहानी बताने के लिए अमरनाथ गुफा की ओर निकलने से पहले अपने शेषनाग को अनंतनाग में छोड़ दिया था। शेषनाग के पुत्र धनसार वासुदेव मानव रूप धारण करने के बाद संत बने। यही कारण है कि इस पवित्र स्थान का नाम महान संत बाबा धनसार के नाम पर रखा गया था।

करूआ झील के करीब स्थित करूआ गांव के लोग पहले एक राक्षस से त्रस्त थे। बाबा धनसार, जिन्हें स्थानीय लोगों ने सहायता के लिए निवेदन किया, ने भगवान शिव से उद्धार के लिए प्रार्थना की। उनके प्रार्थना के जवाब में, भगवान शिव ने राक्षस को नष्ट कर दिया। करूआ झील के पास, बाबा धनसर के लिए एक मंदिर और भगवान शिव के लिए एक गुफा इस दैवीय घटना की याद के रूप में स्थानीय लोगों ने अपनी भक्ति से बनाई थी।

प्राकृतिक और आध्यात्मिक दुनिया के चमत्कार

महाशिवरात्रि त्योहार के दौरान, जब एक मेला (मेला) आयोजित किया जाता है, तो बाबा धनसर मंदिर एक प्रमुख तीर्थ स्थल बन जाता है। भक्तों के अनुसार, यदि कोई पवित्र करुआ झील के नीचे के पानी में पूरे विश्वास के साथ स्नान करता है, तो पानी उनकी इच्छाओं को पूरा करेगा।

प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला शिवलिंग बाबा धनसर की एक आश्चर्यजनक विशेषता है। पूरे साल, दूधिया पानी की बूंदें इस पर गिरती हैं और इस रहस्यमय घटना से स्थान की आध्यात्मिक आभा बढ़ जाती है।

रमणीय दृश्य

अपने धार्मिक महत्व को ध्यान में रखते हुए, करुआ गांव हरे-भरे वनस्पतियों से घिरा एक शांत वातावरण प्रदान करता है और कई झरनों से अलंकृत है। बाबा धनसर के रास्ते में, आपको सुंदर झरने दिखाई देंगे और आपको लगभग 100 सीढ़ियाँ उतरनी होंगी।

त्योहारों और गर्मियों के दौरान बाबा धनसर में इतने सारे लोगों के आने के साथ, यह स्पष्ट है कि पर्यटकों को पूरा करने और उन्हें घर जैसा महसूस कराने के लिए इस जगह को बेहतर सुविधाओं की आवश्यकता है।

रियासी जिले की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को बाबा धनसार द्वारा चित्रित किया गया है। शांति और आध्यात्मिक पूर्ति की तलाश में भक्त और प्रकृति प्रेमी अपनी आकर्षक किंवदंतियों, शांत दृश्यों और गहरे धार्मिक महत्व के कारण इस क्षेत्र में आते रहते हैं। इस पवित्र स्थान को बढ़ाने और प्रचारित करने से, जम्मू और कश्मीर एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संपत्ति हासिल करने के लिए खड़ा है जो तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित कर सकता है।

छवि स्रोत: गूगल

आशीष कुमार ईशर
एलडीसी

संस्थान दर्पण

विचार धारा (कविताएँ)

संघर्ष का सफरनामा

संघर्ष का रास्ता कोई आसान नहीं होता,
हर मुश्किल से लड़ना, ये ही इम्तिहान होता।
गिर कर संभलना, फिर से उठना सीखो,
हर दर्द में छुपा हुआ कोई अरमान होता।

कठिनाइयों की आंधी में, जब खुद को अकेला पाओगे,
हर कदम पर अंधेरा, और हर ओर बस गहराई पाओगे।
उम्मीद की लौ को दिल में जलाए रखना,
क्योंकि मुश्किलों के पार ही, रोशनी का जहां पाओगे।

जब ठोकरें खाकर गिरोगे, और दर्द से कराहोगे,
याद रखना, हर चोट तुम्हें और मजबूत बनाएगी।
संघर्ष की आग में तपकर, सोना भी चमकता है,
तुम्हारी मेहनत ही तुम्हें, नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी।

रास्ते में कांटे बिछे होंगे, और मंजिल दूर लगेगी,
लेकिन धैर्य और संकल्प से, हर मुश्किल आसान लगेगी।
हर गिरावट के बाद, फिर से खड़ा होना सीखो,
क्योंकि गिरकर उठना ही, सच्ची हिम्मत की पहचान बनेगी।

दर्द में छुपी होती हैं, कई अनकही कहानियां,
हर आंसू में बसी होती हैं, कुछ अनसुनी दास्तानें।
संघर्ष के इस सफर में, अपने सपनों को सहेजकर रखना,
क्योंकि इन्हीं सपनों में, तुम्हारे अरमानों की जान बसेगी।

ज़िन्दगी के इस सफर में, कभी हार मत मानना,
हर मुश्किल को पार कर, बस आगे ही बढ़ते जाना।
संघर्ष की इस राह में, तुम खुद को पहचान पाओगे,
और अपने सपनों की मंजिल, खुद अपने हाथों में पाओगे।

संघर्ष का रास्ता कोई आसान नहीं होता,
हर मुश्किल से लड़ना, ये ही इम्तिहान होता।
गिर कर संभलना, फिर से उठना सीखो,
हर दर्द में छुपा हुआ कोई अरमान होता।

शलिन सशिधरन नायर
प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

अगले मोड़ पे सुकून मिलेगा

चल जिंदगी थोड़ा और चले,
अगले मोड़ पर सुकून मिलेगा।

कुछ सुनना है, कुछ कहना है,
कुछ करना है, कुछ सिखाना है।
यहीं सार समझ कर चल जिंदगी थोड़ा और चले,
अगले मोड़ पर सुकून मिलेगा।

ये सुकून की चाहत, ये समां की रंगत,
ये यौवन जवानी, जिम्मेदारी की संगत।
कैसे और चले, मन मचलता है, जी घबराता है,
पर अग्रसर रहने की चाहत, आगे बढ़ना सिखाता है।
कंकरीट के जंगल, शीशे की चारदीवारी,
शहर की चकाचौंध और व्यस्त सड़कों पर,
इंसान जो खुद को अकेला पाता है,
क्या यही सुकून था जिसे ढूंढने शहर आता है ?

जब मैं आज के बारे में सोचा करता हूं,
थोड़ा और घबराया हुआ सा पाता हूं,
हर बार यहीं कह कर हौसला बढ़ाया करता हूं,
चल जिंदगी थोड़ा और चले, अगला मोड़ पर सुकून मिलेगा।

पवन कुमार
इ.एम.बी.ए. (कॉर्पोरेट अफेयर्स एंड मैनेजमेंट)

आरना

नन्हीं सी आरना, मासूम सा चेहरा,
आँखों में चमकती किरणें अनमोल हैं।

मुस्कान उसकी, दुनिया को रोशन करती है,
जैसे सूरज की किरणें अंधेरे को मिटाती हैं।

बेशक हँसती है, मासूमियत से भरी हुई,
हर पल की खुशियां, उसके चेहरे पर लिखी हुई।

छोटी सी आरना, बड़े-बड़े सपने देखती है,
अपनी मासूम नज़रों से, दुनिया को देखती है।

उसकी हर हरकत, हर बात में प्यार छलकता है,
हमारे दिलों को, उसका प्यार ही सजाता है।

आरना की मासूमियत, सबको मोहित करती है,
हर किसी के चेहरे पर, मुस्कान लाती है।

छोटी सी आरना, बड़ी दुनिया का हिस्सा है,
उसकी खुशियों में, हमारी खुशियां भी बसी हैं।

अभय कुमार अवस्थी
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

वो किश, मिस करते हो कि नहीं ...?

नन्हे क़दमों को उठाकर
गोदी में खेल खिला कर
पापा का वो प्यार
वो दुलार
डांट या पुचकार
नाक से नाक मिला कर
गालों पर पापा का वो किश
मिस, करते हो कि नहीं...?
मां के हाथों का वो खाना
खुशबू का था खजाना
विद्यालय की पगडंडी दिखाना
ले के छड़ी पीछे भागना
रोने पर गले लगाना
डांट में भी प्यार जाताना
सिर पर मम्मी का वो किश
मिस, करते हो कि नहीं...?
बातों बातों में चिड़ाना
चोटी पकड़के झगड़ना,
तुम्हारे हिस्से का भी खा जाना
फिर पलभर में प्यार जताना
बदमाशों से लड़ जाना
गले मिल कर प्यार जाताना,
सिर पर भाई का वो किश
मिस, करते हो कि नहीं...?
अंकतालिका या पहली नौकरी का खत,
या अपने किसी खास का खत
बारम्बार उसको पढ़ना
पल भर भी नज़र न हटना
हाथों की वो लिखावट
स्माइलिंग इमोजी की बनावट
ख़ुशी से पत्रों का वो किश
मिस, करते हो कि नहीं...?

लक्ष्मी नारायण जाबड़ोलिया
विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी

भारतीय संस्कृति

भारत की भूमि, शाश्वत सनातन,
संस्कृति की धारा, अजर अमर।
वेदों का ज्ञान, उपनिषदों की गाथा,
गीता का संदेश, सत्य का पथ।

योग की भूमि, ध्यान की धारा,
आत्मा का मर्म, मन का सहारा।
सत्य और अहिंसा की जीवनशैली,
गुरुकुलों की शिक्षा, मानवता की प्याली।

अजंता और एलोरा की चित्रकारी,
ताजमहल की शान, काव्य की तारी।
भरतनाट्यम, कथक और कुचिपुड़ी,
नृत्य और संगीत की मृदुल धुनों की झड़ी।

रामायण और महाभारत की कहानियाँ,
शिव की तांडव, कृष्ण की रासलीला।
दशावतार, अष्टविनायक की पूजा,
धर्म और कर्म की संगमधारा।

होलिका की होली, दीवाली का दीप,
रंगों की होली, प्रेम का संदेश।
मकर संक्रांति, रक्षाबंधन का बंधन,
त्योहारों की श्रृंखला, उत्सव का जीवन।

ऋषि-मुनियों का तप, संतों का प्रवचन,
ज्ञान की धरोहर, संस्कृति की सराहना।
प्रकृति का सम्मान, जीवन का संयम,
भारतीय संस्कृति, अमर और अचंल।

आओ मिलकर, इस संस्कृति का गुणगान करें,
विश्व को इसकी महानता का परिचय दें।
हम हैं भारतीय, गर्व से कहें,
संस्कृति हमारी, सदा जीवित रहे।

शलिन सशिधरन नायर
प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

हर बार मै चुप हो जाता हूं

अनजाने में कुछ न कुछ हो जाता है
पर मुझको कोई न समझ पाता है
मै कहते कहते रुक जाता हूं ।
हर बार मै चुप हो जाता हूं।

इक लहज़े में मुझको कहना है
कामिल लफ्ज़ भी मुझको चुनना है
बहुत सारी बाते में कहना चाहता हूं।
हर बार मै चुप हो जाता हूं ।

हर बार कुछ बेहतर करना चाहा है
पर एहतराम तो बरकरार न रह पाया है
गलती सभी की अपनी बनाता हूं।
हर बार मै चुप हो जाता हूं।

बाते में कुछ कहलवाना चाहता हूं
किसी को मजबूर न में करवाना चाहता हूं
मै खुद को कमजोर समझता हूं
शायद इसलिए
हर बार में चुप हो जाता हूं।

कुछ बयां न कर पाओगे

वो मंज़र भी क्या खूब मंज़र होगा
जब हम और हर कोई तुम्हे इतल्ला कर रहा होगा
और तुम बैठे के बैठे रह जाओगे
पर। कुछ बयां न कर पाओगे।

जुबान तुम्हारी लड़ खड़ाएगी
हर मुमकिन कोशिश करना चाहोगे
पर फिर भी कुछ बयां न कर पाओगे

अरे तुम क्या पूछोगे
वो तुम्हे चलते हुए लेने आएगा
तुमतो खीचते हुए लेकर जाये जाओगे
इसलिए तुम कुछ बयां ना कर पाओगे

इक ज़री सा वो पल होगा
जब तुम लफ्ज़ चुन न पाओगे
शायद इसलिए तुम कुछ बयां ना कर पाओगे

ज़िन्दगी का वो आखिर लम्हा होगा
यू तड़पोगे जैसे न कोई तड़पा होगा
ज़िन्दगी भर की सारी यादें एक झटके में भूल जाओगे
पर तुम कुछ बयां ना कर पयोगे

धर्मेश बारोडिया
विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी

हौसलों की रोशनी: विकसित भारत की ओर .....

विश्वास की रोशनी से,
सपनों को करो जगमग।
हौसले की ताकत से,
जीवन को करो प्रेरक।
संघर्ष की राहों में,
कभी मत हो हताश।
दुखों को हराकर तुम,
पाओगे मंजिल का प्रकाश।
सपनों की ऊँचाई तक,
अपने कदम बढ़ाओ।
हर पल को खुशियों से भर,
सफलता को अपनाओ।
मन को रौशन कर लो,
हर चुनौती को हराओ।
ताकत को साथी बना,
मंजिल पर मुस्कराओ।
विकसित भारत का सपना,
हम सबको मिलकर बनाना।
विश्वास और मेहनत से,
देश को आगे बढ़ाना।
विश्वास के पंखों से,
आसमान को छू जाओ।
प्रेरक बनो जीवन में,
खुशियों से भर जाओ।

डॉ प्रतीक माहेश्वरी
सहायक प्रोफेसर

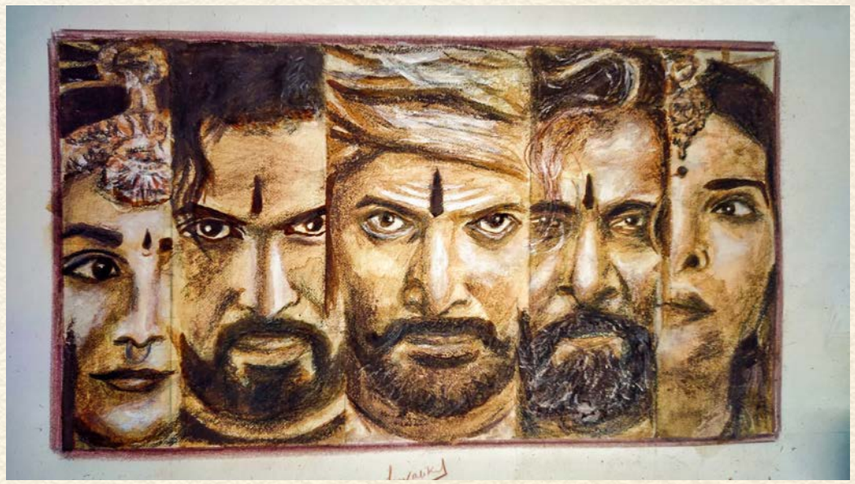

कमाकु प्रवालिका
आईपीएम22023

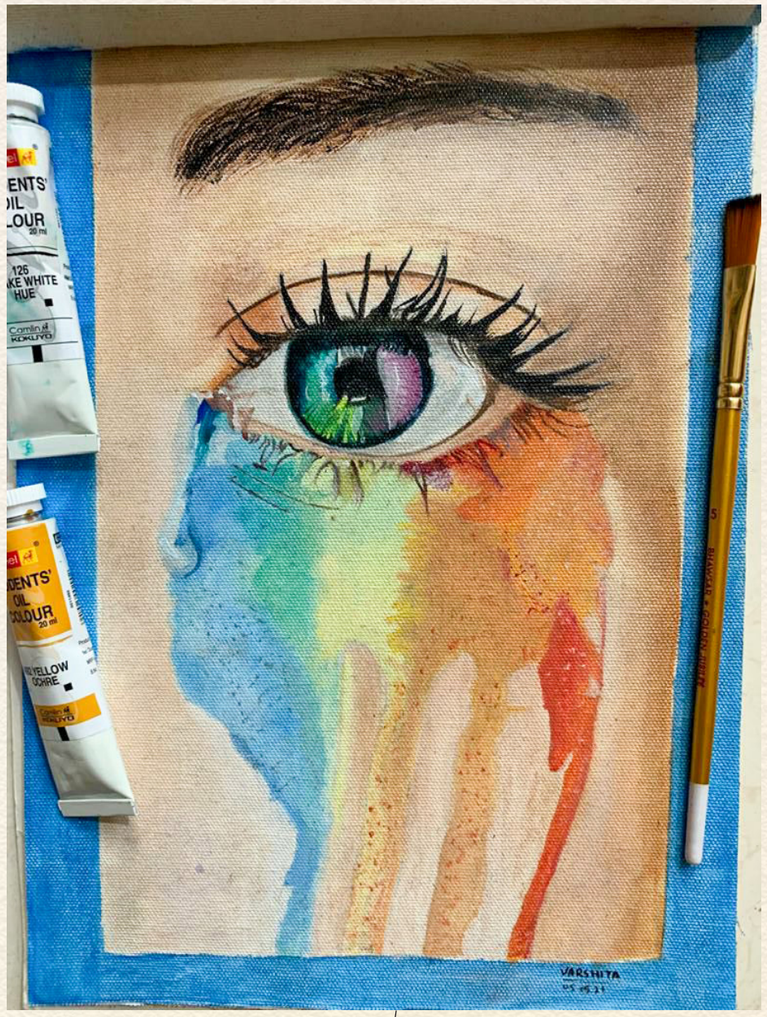

वर्शिता जैन
एमबीए08

ईशा रावत,
एमबीए08

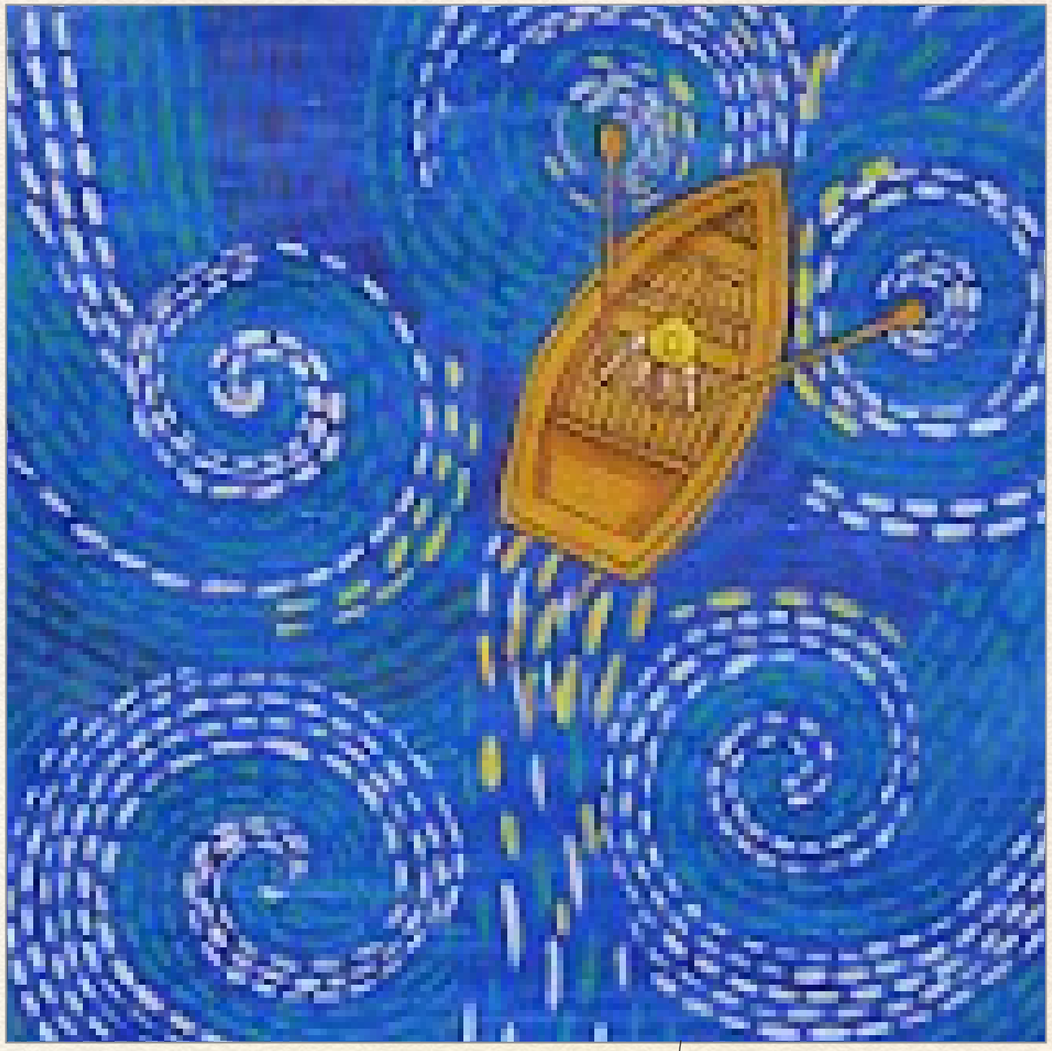

ईशा रावत,
एमबीए08

IIM JAMMU
सा विद्या या विमुक्तये

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu

जगती, जम्मू-181221, भारत
Jagti, Jammu-181221, India
ई-मेल: | E-mail: info@iimj.ac.in
फ़ोन नंबर: | Phone No.: 0191-2741400

cygnusadvertising.in